

॥ श्री हनुमते नमः ॥

श्री हनुमान चालीसा

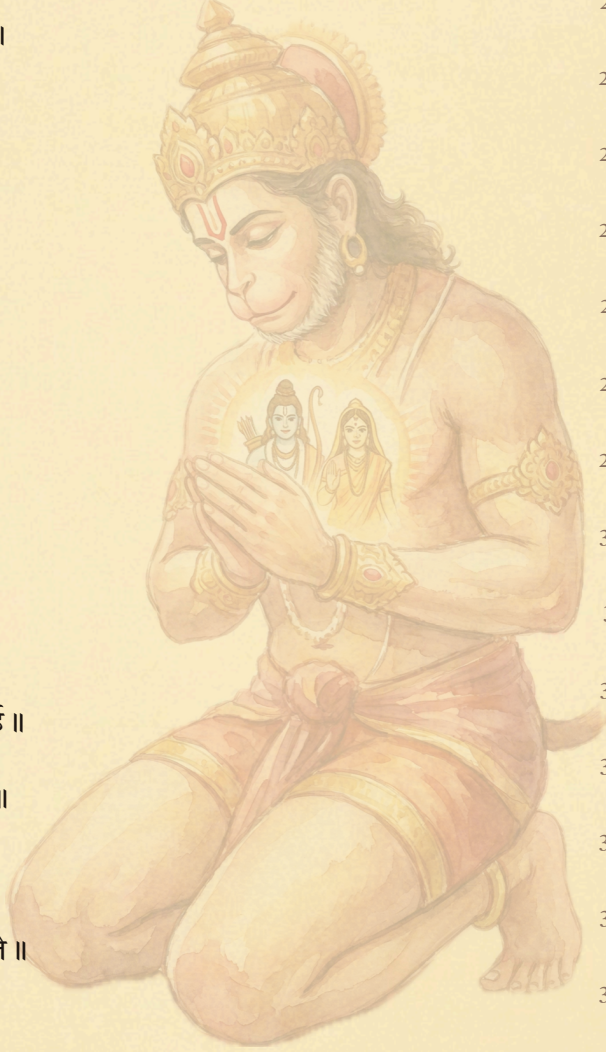
गोस्वामी तुलसीदास रचित - गीता प्रेस, गोरखपुरच्या पाठानुसार

॥ दोहा ॥

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि । बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौ पवन-कुमार । बल बुधि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार ॥

॥ चौपाई ॥

- 1 जय हनुमान ज्ञान गुन सागर ।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥
- 2 राम दूत अतुलित बल धामा ।
अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ॥
- 3 महाबीर बिक्रम बजरंगी ।
कुमति निवार सुमति के संगी ॥
- 4 कंचन बरन बिराज सुबेसा ।
कानन कुंडल कुंचित केसा ॥
- 5 हाथ बज्र और ध्वजा बिराजै ।
काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥
- 6 संकर सुवन केसरीनंदन ।
तेज प्रताप महा जग बंदन ॥
- 7 बिद्यावान गुनी अति चातुर ।
राम काज करिबे को आतुर ॥
- 8 प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।
राम लषन सीता मन बसिया ॥
- 9 सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ।
बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥
- 10 भीम रूप धरि असुर सँहारे ।
रामचंद्र के काज सँवारे ॥
- 11 लाय सजीवन लखन जियाये ।
श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥
- 12 रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई ।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥
- 13 सहस्र बदन तुम्हरो जस गावैं ।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥
- 14 सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।
नारद सारद सहित अहीसा ॥
- 15 जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।
कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥
- 16 तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ।
राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥
- 17 तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना ।
लंकेस्वर भए सब जग जाना ॥
- 18 जुग सहस्र जोजन पर भानू ।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥
- 19 प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥
- 20 दुर्गम काज जगत के जेते ।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥



- 21 राम दुआरे तुम रखवारे ।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥
- 22 सब सुख लहै तुम्हारी सरना ।
तुम रच्छक काहु को डर ना ॥
- 23 आपन तेज सम्हारो आपै ।
तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥
- 24 भूत पिसाच निकट नहिं आवै ।
महाबीर जब नाम सुनावै ॥
- 25 नासै रोग हरै सब पीरा ।
जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥
- 26 संकट तें हनुमान छुड़ावै ।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥
- 27 सब पर राम तपस्वी राजा ।
तिन के काज सकल तुम साजा ॥
- 28 और मनोरथ जो कोइ लावै ।
सोइ अमित जीवन फल पावै ॥
- 29 चारों जुग परताप तुम्हारा ।
है परसिद्ध जगत उजियारा ॥
- 30 साधु संत के तुम रखवारे ।
असुर निकंदन राम दुलारे ॥
- 31 अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता ।
अस बर दीन जानकी माता ॥
- 32 राम रसायन तुम्हरे पासा ।
सदा रहो रघुपति के दासा ॥
- 33 तुम्हरे भजन राम को पावै ।
जनम जनम के दुख बिसरावै ॥
- 34 अंत काल रघुबर पुर जाई ।
जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥
- 35 और देवता चित्त न धरई ।
हनुमत सेइ सर्व सुख करई ॥
- 36 संकट कटै मिटै सब पीरा ।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥
- 37 जै जै जै हनुमान गोसाई ।
कृपा करहु गुरु देव की नाई ॥
- 38 जो सत बार पाठ कर कोई ।
छूटहि बंदि महा सुख होई ॥
- 39 जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा ।
होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥
- 40 तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥

॥ दोहा ॥

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप । राम लषन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥